विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

वर्ष 4 अंक 60
पृष्ठ 20
मुजफ्फरपुर, शुक्रवार
28 अगस्त 2015
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 2.50

दैनिक जागरण

# पंजाब में मुजफ्फरपुर की लीची का जलवा

अमरेन्द्र तिवारी, मुजफ्फरपुर

- अब जूस के अलावा सुखौता, किशमिश और रसगुल्ला भी हो रहा तैयार
- प्रसंस्करण व बाजार मिले तो धान व गेहूं से ज्यादा फायदे वाली पैदावार
- लोग पूरे साल लीची के विभिन्न उत्पादों का ले सकते हैं आनंद

पंजाब में भी मुजफ्फरपुर की लीची रानी का जलवा है। वहां के किसानों की पसंद मुजफ्फरपुर वेरायटी है। इधर लीची अनुसंधान केंद्र की पहल है कि लोग साल भर इसका स्वाद ले सकते हैं।

## लीची के ये प्रोडक्ट तैयार

लीची को छिलका सहित सूखाकर सुखौता बनाया जा रहा है। धूप में सूखाने की वनस्पति यांत्रिक विधि से गुणवत्ता युक्त उत्पाद प्राप्त होता है। लीची किशमिश को तैयार कर घर में रख सकते हैं। लीची का रसगुल्ला सालों भर खा सकते हैं। लीचिका इंटरनेशनल के संचालक कृष्णनंदन प्रसाद ठाकुर जूस व रसगुल्ला का उत्पादन करते हैं। उद्यमी राजकुमार केडिया भी उस बनाकर आपूर्ति करते हैं।

उद्यान रत्न किसान भोलेनाथ झा ने कहा कि बिहार व भारत सरकार को थाईलैंड व चीन की तकनीक का इस्तेमाल करना चाहिए। थाईलैंड में हर साल एक लाख टन लीची का उत्पादन होता है, जिसमें 90 हजार टन प्रसंस्करण कर शराब, जूस बनाया जाता है। साल भर इसका व्यापार होता है। चीन भी हर साल 15 लाख टन उत्पादन में से दस लाख टन का प्रसंस्करण करता है। वहीं भारत में .01 प्रतिशत प्रसंस्करण हो रहा है, जबकि उत्पादन पांच लाख टन है। बिहार में प्रसंस्करण व बाजार की व्यवस्था हो तो यहां पर किसान साल पर लीची से कमाई करेंगे सरकार को भी राजस्व मिलेगा और बड़े पैमाने पर रोजगार मिलेगा। एशियन बैंक ने 2003 में सर्वे किया था। उसमें यह बात सामने आई कि बिहार में अगर प्रसंस्करण हो जाए तो पांच हजार करोड़ की आय होगी। यह आमदनी धान व गेहूं से ज्यादा होगा।

## अलग-अलग प्रदेश में लीची की अलग-अलग वेरायटी

- बिहार में शाही, चाइना, पूर्वी, करजी, कस्बा, लौंगिया।
- उत्तर प्रदेश में शाही, चाइना, त्रिकोलिया, अझौली, देशी, ग्रीन, स्वर्ण, रूपा।
- झारखंड में शाही, चाइना, त्रिकोलिया, अझोली, देशी, ग्रीन, स्वर्ण व रूपा ।
- उत्तराखंड में रोज सेंटेड, देहरादून, कलकतिया, चाइना, देहरारोज, बेदाना।
- पश्चिम बंगाल में बम्बई, बेदाना, रोज सेंटेड।
- पंजाब में बेदाना, मुजफ्फरपुर, लेट लार्ज रेड।

लीची से बने विभिन्न प्रकार के उत्पाद

लीची अनुसंधान केंद्र तकनीक के बारे में उद्यमियों को प्रशिक्षण दे रहा है। अगर कोई किसान लीची प्रोडक्ट बनाना चाहता है तो वह संपर्क करे। उसको तकनीक से अवगत कराया जाएगा। प्रशिक्षण व सलाह किसानों को मुफ्त में दी जाती है।

-डा. एसके पूर्वे, प्रधान वैज्ञानिक
राष्ट्रीय लीची अनुसंधान केंद्र